महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय) *(A*
Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विवि में भूमंडलीकरण और हिंदी पत्रकारिता पर संगोष्ठी

साहित्य विद्यापीठ का आयोजन

वर्धा दि. 11 अक्टूबर 2012 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में 8 एवं 9 अक्टूबर को 'भूमंडलीकरण और हिंदी पत्रकारिता' तथा 'नवजागरण की समस्याएँ' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। हिंदी विभाग द्वारा आयोजित संगोष्ठी गंभीर विषय के कारण काफी चर्चित रही। कार्यक्रम के आरंभ में हिंदी विभाग के अध्यक्ष, प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि इन दोनों विषय पर हमें लगातार अध्ययन करने की जरूरत है। भूमंडलीकरण और हिंदी पत्रकारिता पर चर्चा करते हुए मुख्यवक्ता किशन कालजयी ने बाजार की मानसिकता और प्रभाव पर विशेष प्रकाश डाला। उन्होंने बाजार की नीतियों के साथ हिंदी पत्रकारिता को जोड़ते हुए कहा कि वर्तमान में पत्रिकाएँ संपादकों द्वारा नहीं 'मैनेजरों' द्वारा संचलित की जा रही है। पेड न्यूज जैसी गंभीर समस्याओं का जिक्र करते हुए, उन्होंने चौथे-स्तंभ के रूप में स्वीकृत पत्रकारिता पर प्रासंगिक प्रश्न उठाए। समाधान के रूप में उन्होंने चरित्र और नैतिकता पर विशेष बल दिया।

'नवजागरण की समस्याएँ' विषय पर कर्मेंदु शिशिर ने सामान्य संप्रेषित योग्य भाषा में विषय के ऐतिहासिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर चर्चा की। 'नवजागरण' विषय पर स्थापित मान्यताओं जिनमें रामविलास शर्मा से लेकर वीरभारत तलवार सभी पर गंभीर चिन्तन करते हुए वर्तमान परिदृश्य में समझने की कोशिश की गई।

हबीब तनवीर सभागार में आयोजित संगोष्ठी में 'परंपरा और आधुनिकता' पर बोलते हुए विश्वविद्यालय के अतिथि लेखक प्रो. विजय मोहन सिंह ने कहा कि परंपरा एक समुच्चय है। यह कैसे बनती है और किसके द्वारा बनायी जाती है इसपर लगातार अध्ययन की गुंजाईश होनी चाहिए। वक्तव्य में 'परंपरा' और रूढ़ि को स्पष्ट रेखांकित करते हुए उन्होंने इस मत पर जोर दिया कि परंपरा को रूढ़ि विकृत करती है। आधुनिकता पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि आधुनिकता विज्ञान पर आधारित होती है।

लंबे प्रश्नकाल के उपरान्त हिंदी विभाग के प्रो. रामवीर सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि सैकडों पुस्तकों के बावजूद आज हम परंपरा और आधुनिकता जैसे गंभीर विषय पर भ्रमित महसूस करते है, इसलिए प्रस्तुत विषय पर लगातार बहस होनी चाहिए।

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी